Result Mitra Daily Magazine

डॉल्फिन संरक्षण

हालिया संदर्भ :

- 18 दिसंबर 2024 को पहली बार गंगा नदी डॉल्फिन यानि गांगेटिक डॉल्फिन (प्लेटनिस्टा गैंगेटिका) को असम में Tag किया गया, जिसे प्रोजेक्ट डॉल्फिन के लिए ऐतिहासिक मील का पत्थर माना जा रहा है।
- 'Project Dolphin' भारत के राष्ट्रीय जलीय जीव के संरक्षण की दिशा में लक्षित है।

महत्व :

- पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अनुसार, Tag किए जाने से डॉल्फिन के मौसमी एवं प्रवासी पैटर्न, सीमा, वितरण एवं आवास उपयोग को समझने में मदद मिलेगी।
- यह खंडित या अशांत नदी प्रणालियों में उपरोक्त तथ्यों के विश्लेषण में ज्यादा महत्वपूर्ण होगा।

गंगा नदी डॉल्फिन :

- इनके कई परिवार है, जिनके 40 प्रजातियों को डॉल्फिन कहा जाता है।
- प्लैटैनिस्टिके परिवार में भारतीय नदी Dolphin की दो प्रजातियां शामिल है –

1. सिंधु नदी डॉल्फिन
2. गंगा नदी डॉल्फिन

- दिलचस्प यह है कि 1970 के दशक तक इन दोनों प्रजातियों को एक ही समझा जाता था।
- गंगा नदी डॉल्फिन संरक्षण कार्य योजना (2010–2020) के अनुसार नर गंगा डॉल्फिन 2–2.2 मीटर लंबा, जबकि मादा डॉल्फिन 2.4–2.6 मीटर लंबी होती है।
- वयस्क डॉल्फिन का वजन 70–90 kg तक होता है तथा ये मुख्यतः मछलियों एवं अकशेरुकी प्रजातियां को अपना भोजन बनाते हैं।
- गंगा नदी डॉल्फिन सामान्यतः अकेले एवं छोटे समूहों में पाए जाते हैं।
- ये बेहद शर्मीले स्वभाव के होते हैं , जिससे ये नावों के आसपास आने से बचते हैं और यही कारण है कि वैज्ञानिकों के लिए उन्हें देखना मुश्किल होता है।
- ये अलग-अलग जगहों में अलग-अलग नामों से जाने जाते हैं, जैसे–सुसु, सूंस, सोन्स, सूस (हिंदी), हिहो या हिहू (असमिया), शूस, सु, भगीरथ (नेपाली)
- सांस्कृतिक रूप से डॉल्फिन को अक्सर गंगा से जोड़ा जाता है तथा इसे देवी गंगा का वाहन बताया जाता है।

घटती आबादी :

- एक समय में गंगा नदी डॉल्फिन बांग्लादेश और भारत की गंगा–ब्रह्मपुत्र–मेघना एवं कर्णफुली–सांगू नदी प्रणालियों तथा नेपाल के सप्तकोसी एवं करनाली नदियों में बड़ी संख्या में पाई जाती थी। साथ ही हिमालय की तलहटी वाले नदी प्रणालियों में पाई जाती थी।
- WWF (World Wildlife Foundation) के अनुसार, अब यह प्रजाति अपने मूल वितरण क्षेत्रों में विलुप्त हो चुकी है तथा वर्तमान में इनकी जीवित संख्या 3500–5000 है।
- सिंधु एवं गंगा दोनों, नदी डॉल्फिन को 1990 के दशक (1996) से IUCN (अंतरराष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ) के Red List में 'Endangered' (संकटग्रस्त) के रूप में वर्णित है।
- यह वर्गीकरण दर्शाता है कि इस पर जंगली रूप से विलुप्त होने का खतरा बना हुआ है।

Note :– 'CITES' की सूची में इसे 'Appendix–1 में रखा गया है।

Note :– डॉल्फिन को 'Tiger of Ganges' भी कहा जाता है।

घटती आबादी के कारण :

- नदियों से बांधो एवं बैराजों का निर्माण जिनसे इनका प्राकृतिक आवास, उन्मुक्त आवाजाही, प्रजनन, भोजन–प्रणाली आदि बाधित होता है।
- जल प्रदूषण, जिससे प्राकृतिक आवास रहने योग्य नहीं रह गए हैं एवं शिकार योग्य प्रजातियों में कमी आई है।

- इसके तैलीय वसा (Oily Fat) के लिए शिकार,
- मछली पकड़ने वाले जाल में फंस जाना,
- नदियों के सूखने या बहाव में कमी से प्राकृतिक आवास का नुकसान,

संरक्षण के प्रयास :

- 1980 के दशक से ही इसके संरक्षण के लिए कई प्रयास किये जा रहे हैं लेकिन इससे बहुत ज्यादा लाभ नहीं हुआ है।

वन्यजीव संरक्षण एक्ट :

- 1985 में 'गंगा कार्य योजना' शुरू किए जाने के बाद सरकार द्वारा 1986 में इसे भारतीय वन्य जीव (संरक्षण) एक्ट, 1972 के अनुसूची–1 में शामिल किया गया।
- इसका उद्देश्य इसके शिकार पर रोक लगाना तथा इसके संरक्षण के लिए वन्य जीव अभ्यारण निर्मित करना है।
- इसी एक्ट के तहत भागलपुर (बिहार) में विक्रमशिला गंगा डॉल्फिन अभ्यारण बनाया गया।

संरक्षण योजना :

- गंगा नदी डॉल्फिन संरक्षण कार्य योजना 2010–2020 तैयार किया गया, जिसके तहत नदी यातायात, शिकार–आधार की कमी आदि की जांच की गई।

जलीय जीव :

- 2009 में सरकार द्वारा इसके संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए इसे राष्ट्रीय जलीय जीव घोषित किया गया।
- राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन द्वारा प्रत्येक वर्ष 5 अक्टूबर को गंगा डॉल्फिन दिवस मनाया जाता है।

प्रोजेक्ट डॉल्फिन :

- इसे वर्ष 2020 में नरेंद्र मोदी द्वारा लांच किया गया था, जो डॉल्फिन के संरक्षण की दिशा में नवीनतम प्रयास है।
- यह 'प्रोजेक्ट टाइगर 'के तर्ज पर होगा, जो बाघों की आबादी को बढ़ाने में बेहद सफल रहा है।

Tag की विशेषता :

- डॉल्फिन को Tag किया जाना नवीनतम पहल है, जिसे Signal उत्सर्जित करने के लिए डिजाइन किया गया है।
- ये Signal उपग्रहों द्वारा प्रयोग में लाए जाएंगे, जो इसके Real–time संरक्षण प्रयासों में मददगार होगा।
- प्रोजेक्ट डॉल्फिन, डॉल्फिन को 'छाता प्रजाति'(Umbrella Species) के रूप में मानता है, जो समग्रता से नदी के लिए एक संकेतक का कार्य करती है।

विशिष्ट विशेषता :

- इनके शरीर पर बाल नहीं होते हैं एवं इनका skin मुलायम एवं चिकना होता है।
- मादा डॉल्फिन प्रत्येक 2-3 वर्ष में एक बच्चे को जन्म देती है,
- ध्यातव्य हो कि ये स्तनपायी (Mammal) है।
- इसके सिर पर एक छेद (Blowhole) होता है और यही कारण है कि इसे प्रत्येक 2-3 मिनट में सांस लेने के लिए सतह पर आना पड़ता है।
- ये स्तनधारी अंधे होते हैं तथा इकोलोकेशन क्षमता के आधार पर शिकार एवं सफर करती है।
- इकोलोकेशन ऐसी विधि होती है, जिसमें ये अल्ट्रासाउंड उत्सर्जित कर इसके परावर्तित ध्वनि को सुनकर शिकार या अन्य चीजों का पता लगाती है।

Note :– सर्वप्रथम वर्ष 2008 में असम सरकार ने डॉल्फिन को राज्य का जलीय पशु घोषित किया था।

Note :– वर्तमान में बिहार, असम, पंजाब (सिंधु नदी की डॉल्फिन) एवं UP में डॉल्फिन को राजकीय जीव का दर्जा प्राप्त है।

मीठे जल की डॉल्फिन :

- डॉल्फिन सामान्यतः खारे पानी में पाई जाती है लेकिन 4 प्रजातियां ऐसी है, जो केवल मीठे पानी में पाई जाती है, जिसमें से चीन के यांग्त्जे नदी में पाई जाने वाली बैजी डॉल्फिन को 2006 में विलुप्त घोषित कर दिया गया।
- वर्तमान में तीन मीठे जल की प्रजातियां है –

1. गंगा नदी डॉल्फिन
2. सिंधु नदी डॉल्फिन – भूलन
3. अमेजन नदी डॉल्फिन –बोटो

Note :– डॉल्फिन रिसर्च सेंटर पटना, बिहार में है।